'वेदों में-वायु विज्ञान'

देश के शीर्षस्थ वैज्ञानिक डा. राजा रमन्ना ने एक वक्तव्य मद्रास में दिया जो दैनिक हिन्दुस्थान में २९-७-९५ को प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने वेदों को ज्ञान की खान बतलाया है। लेकिन हमारे यहाँ महाभारत काल के उपरान्त इस विषय में सही मार्गदर्शन किसी ने नहीं दिया। महर्षि दयानन्द ने निष्पक्ष दृष्टि से जो वेदभाष्य किये, उनके भावार्थ से यह लगता है कि वह भी साधनों की कमी व समयाभाव के कारण केवल इसका कुछ आभास पा सके थे कि वेद विज्ञान के अगाध श्रोत हैं। जैसा कि आर्यसमाज के नियम से कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है। आज हम उनके वेदभाष्य को निष्पक्ष दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो लगता है कि वेदों में मनुष्य मात्र को जीवन यापन करने के लिये भौतिक विद्याओं का ज्ञान कराया गया है।

वेदों में विज्ञान के हर सिद्धान्त का बीज रुप में बहुत ही संक्षेप में वर्णन मिलता है। जैसे-ऋग्वेद में वायु विज्ञान को लीजिए, इसमें वायु के विज्ञान को मधुच्छन्दा ऋषि ने मंडल १ सूक्त २ वर्ग ३ मंत्र (१ से ५) को देखने से ज्ञात होता है कि एक (दर्शत) शब्द में ही वायु का स्पर्श आदि या ज्ञान से देखने योग्य गुणों का ज्ञान दे दिया है (वायी) शब्द से अनंत बल युक्त, सब पदार्थों का आधार और सब प्राणियों के जीवन का हेतु सिद्धांत दे दिया है। (हवम्) शब्द से भी वाणी सिद्धांत दे दिया है जिससे सब प्राणी कहते और सुनते हैं, उसका मूल आधार वायु ही है। (अहर्निद) शब्द से विज्ञान रुप प्रकाश को प्राप्त कराने वाली क्रियाओं के साधन वायु को ही बताया गया है। (प्रपंचति) शब्द द्वारा सब विद्याओं का संबंध करानेवाला वायु ही होता है। (उरुचि) शब्द से क्रिया विशेष द्वारा अनेक विद्याओ के प्रयोजनों को प्राप्त कराने का साधन वायु को ही बताया है। (इमे सुता) नामक शब्द से प्रत्यक्ष जलक्रिया में यज्ञ को करनेवाला वायु ही है। (सुतसोमा) शब्द से औषधि आदि पदार्थो को उत्पन्न करनेवाला भी वायु विशेष ही है। (इन्दव) शब्द द्वारा सूर्य, भूमि को रोकनेवाला या आकर्षण करनेवाला वायुविशेष ही होता है। (प्रयोमिः) अन्नादि पदार्थों को उत्पन्न करनेवाला वायु विशेष ही होता है। (वाजिनी वसु) शब्द से प्रातःकाल के तुल्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाला (सुतानाम) चेतत क्रिया द्वारा सब पदार्थों को दृष्टियोग करानेवाला, (इन्द्रवायु) सूर्य और पवन के योग से अनेक कार्य करनेवाला वायु ही होता है।

इस प्रकरण का यजुर्वेद के अध्याय ७ मंत्र ८ और अध्याय

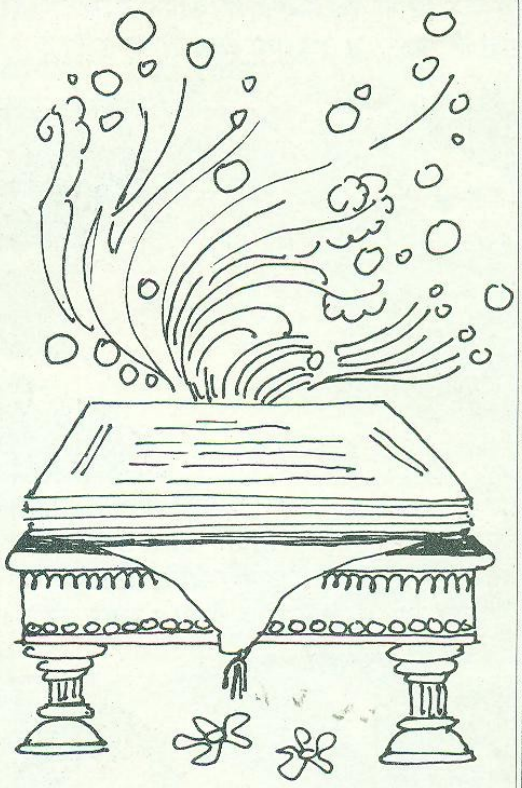

३३ के मंत्र ५६ में (निरुक्त १०-२) (तैत्तरीय संहिता १-४-४-१) द्वारा भी आपसी संबंध प्रकट होता है। इसी तरह से ऋग्वेद के चौथे वर्ग में भी सूर्य, अग्नि तथा जल से संयोग होने वाले वायुकर्मो का अनेक शब्दों द्वारा सिद्धांत दिए हैं। यह प्रकरण यजु. ३३-५७ और सामवेद उत्तरार्थिक ८५१ में भी है जिसमें वर्षा, वायु विज्ञान के संबध में अनेक शब्दों के द्वारा सिद्धांत दिए हुए है। ऋग्वेद के प्रथम मंडल के छटे सूक्त में ११,१२ वें वर्ग के मंत्रों में सब कारीगरी की शिल्प को सिद्ध करनेवाला वायु-सिद्धांत, सूर्य-वायू सिद्धांत, वाणीका व्यवहार करानेवाला वायु-सिद्धांत, अन्तरिक्ष लोकों के विभाग करानेवाला वायुसिद्धांत का भी दिग्दर्शन कराया गया है। यह (सामवेद उत्तरार्चिक ८५०) (अथर्व. २०-४०-१०३) (२०-६९-१२ व २०-७०- २ से ६।) निरुक्त ४-१२ द्वारा भी बंधे हैं। ऋग्वेद (१-१०-२) में वर्ग १९ वें में यूथेन वायु के कर्मसिद्धांत दिये हैं।

कण्वोमेधातिथ ऋषि- ने भी (ऋ. १-१५-३) व वर्ग २८ में पदार्थों को अच्छी प्रकार दिलानेवाला वायुकर्म सिद्धान्त दिये हैं। इन्हीं ऋषिने १९ वें सूक्त के ३६ वें वर्ग के मंत्रों में अग्नि के साथ प्रयुक्त होनेवाले पवन-गुण-कर्म सिद्धान्त को दर्शाया गया

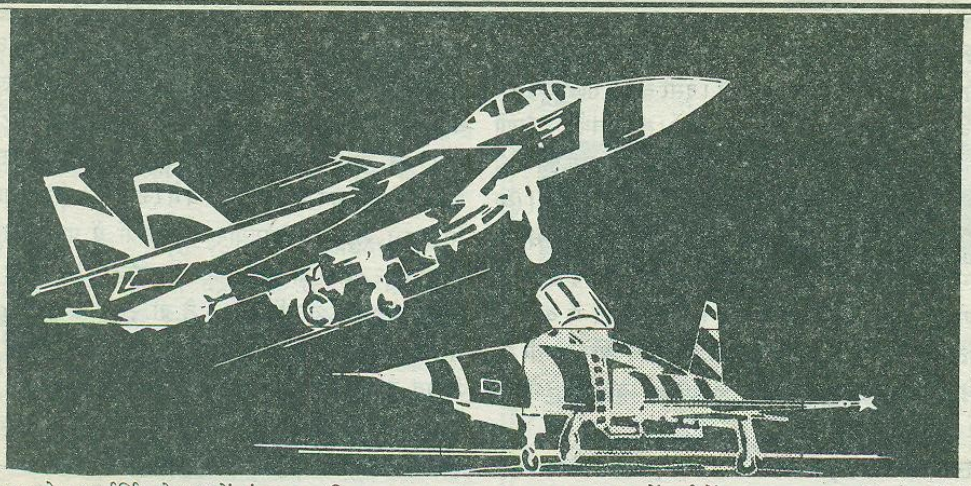

है। यह सामवेद, पूर्वार्धिक के १६ वें मंत्र तथा (निरूक्त १०-३६) द्वाराभी निर्देशित है।१६ वें सुक्त में ही ३७ वें वर्ग में प्रकाशमान लोक, अन्तरिक्ष, अग्नि, जलवर्षा विज्ञान को अनेक शब्द सिद्धान्त द्वारा दर्शाया गया है। २१ वें सूक्त में दूसरे अध्याय के तीसरे वर्ग के मंत्रों में, वायु, अग्नि द्वारा सब संसारी पदार्थों की रक्षा और पालन करने वाले वायु-सिद्धान्तों को दर्शाया गया है।२३ वें सूक्त के ८ वें वर्ग के मंत्रों में अतिसूक्ष्म चलायमान पदार्थों को अपने अंदर करनेवाली तीव्रावायु सिद्धांत, प्रकाशयुक्त आकाश में विमानो की पहुंचाने वाले दिव्यगुण अग्नि-पवन के कर्मों के सिद्धांतो को दर्शाया गया है।

घोरकाण्व ऋषि - ने ३७ वें सूक्त के १२ वे वर्ग मे विमान और यानों में अश्व-शक्ति को वेगरुप देनेवाले पवन समूह कर्म सिद्धांत का दर्शन कराया है। (सामवेद, पूर्वाचिक १३५) निरुक्त ७) (तैत्तरीय रा ४-३-१३-६) द्वारा भी निर्देशित है।इसी सूक्त के १३ वे वर्ग के मंत्रों में अंतरिक्ष में रहनेवाले, प्रकाशमान और अप्रकाशमान लोकों में फेंकने और पहुंचानेवाले वायु-कर्म-गुण सिद्धांतों पर प्रकाश डाला है। यह (साम.पूर्वा.मंत्र २२१) द्वारा संबंधित है। १४ वें वर्ग के मंत्रों मे वर्षा-वायु सिद्धान्त,तथा विमानों को शीघ्र गमनागमन करानेवाले तथा लोकों को रोकनेवाले पवन और किरण के सिद्धातों को दिया है ३८ वें सूक्त के १५ वें वर्ग के मंत्रों में लोकों को रोकनेवाले पवन और किरण सिद्धान्तों को दर्शाया गया है। इसी सूक्तके १६ वें वर्ग के मंत्रों में अन्तरिक्ष में विद्युत उत्पन्न करने वाले वायुसिद्धान्तों का वर्णन है।(तैत्त.सं. २-४-८-१ व ३-१-११-५) द्वारा भी निर्देशित हैं। १७ में वर्ग में शब्द उत्पन्न करनेवाले वायु-पवन के गमन, बल, व्यवहारों द्वारा कला-चक्र विमान आदि रथों को चलानेवाले वायु-कर्म सिद्धान्तों का दर्शन कराया है। ३९ वे सूक्त के १८ वें वर्ग में शस्त्रों में प्रयुक्त होने वाले, सब को कँपानेवाले वायु-किरण सिद्धांत को बताया है। (तैत्त.ब्रा. २-४-४-३) १९ वें वर्ग में रक्तगुण युक्त अग्नि को रथों में युक्त करके,स्थल,जल, अंतरिक्ष में ले जानेवाला वायु कर्म सिद्धान्तों का दर्शन कराया है। (निरूक्त ६-२३)।४३ वें सूक्त के २६ वें वर्ग में प्राण-वायु कर्म सिद्धांत दिये हैं। (तै.ब्रा.३-४-११-२) व (तै.आ. १०-१७-१) द्वारा निर्देशित है। १७ वें वर्ग में प्राणवायु पदार्थ कर्म सिद्धांत दिये हैं।

राहुगणो गौतम ऋषि - नें (१-८५-१,६) मत्रों में अष्टक १ अध्याय ६ के ९ वें वर्ग के मंत्रों में रथों में वायु से युक्त जलों को संयुक्त करने की क्रिया-सिद्धान्तों का वर्णन है। यहाँ अथर्व २०-१३) द्वारा भी बँधे है। १० वें वर्ग में अग्नि -जल की वर्षायुक्त वायु को विमानों में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्तों का दर्शन कराया गया है। (तैत्त. रा.१-५-११-५) (४-१-११-३) (तैत्त.ब्रा.२-८-५-१६) द्वारा भी निर्देशित है। ८६ वें सूक्त के ११ वें वर्ग में वायु द्वारा रक्षण गुण कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। जो (यजु. ८-३१, (अथर्व १-२) (तैत्त.सं. ४-२१-११,१-२)। १२ वें वर्ग में शस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले वायु सिद्धान्त (साम. उत्तरा . १५९४) (तैत्त.सं. ४-३-१३-५) द्वारा ८७ वे सूक्त के १३ वें वर्ग में विमान तथा शस्त्रों मे प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्त दिये हैं। (निरूक्त ४-१६) (तैत्त.सं.२-१-११-८) (४-२-११-२) (४-३-१३-७) द्वारा निर्देशित हैं। ८८ वे सूक्त के १४ वें वर्ग में तार, विद्युत, विमान आदि में प्रयुक्त होने वाले वायु-कर्म-सिद्धान्तों का वर्णन है। (निरूक्त ५-४ तथा ११-१४ द्वारा निर्देशित हैं।

परूच्छेप ऋषि - ने(१-१३४-१ से ६) मंत्रों में तथा दूसरे अष्टक के मंत्रों में बहुत अश्व लगे विमानों में प्रयुक्त होनेवाले वायु-कर्म सिद्धांत दिये हैं। इसी सूक्त के २४ वे वर्ग में एक देश से दूसरे देश में पहुंचानेवाले वायुकर्म सिद्धांत हैं। २५ वे वर्ग में परमाणुओं में प्रयुक्त होनेवाले वायु संगत सिद्धान्तों का वर्णन है।

अगस्त्य ऋषि - ने १६६ वें सूक्त के १०५ मंत्रों में अथवा दूसरे

अष्टक के चौथे अध्याय के प्रथम वर्ग में बहुत प्रकार के शब्द करनेवाले वायु कर्म सिद्धान्त दर्शाए हैं। दूसरे वर्ग में तीव्र गुण कर्म स्वभावयुक्त वायुओं के कर्म सिद्धान्त दिये हैं। तीसरे वर्ग में किरणों तथा अंतरिक्ष में प्रयुक्त होनेवाले वायुओं के सिद्धान्त दिये हैं। चौथे वर्ग में विद्युत आकर्षण करनेवाले वायुसिद्धान्तों का दर्शन है। (ऋ १-१६५) तथा (१६७-११) द्वारा भी निर्देशित है। ५ वें वर्ग में (गुवाम्) नमक वायु के कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। ६ वें वर्ग में (प्राणवायु गुण- कर्म सिद्धांत दिये हैं। ७ वें वर्ग में वायुगति सिद्धांत। १७१ वे सूक्त के ११ वें गर्व में अतिवेगवान अश्वों को चलानेवाले वायुसिद्धान्त दिये है। १२ वें वर्ग में चित्रविचित्र मेघ के सदृश वायुकर्म सिद्धांत दिये हैं।

गुप्तसमद ऋषि - ने दूसरे मंडल के ३४ वे सूक्त के १ से ५ तक के मंत्रों में मानो में प्रयुक्त होनेवाले अश्वो में प्रयुक्त होनेवाले वायुकर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। (अष्टक २-७-१९) (तैत्त.ब्रा. २-५-५-४) द्वारा निर्देशित है। २० वें वर्ग में भी रथ तथा विमानों में भी वायु - कर्म सिद्धान्त दिये हैं। २१ वें वर्ग में यान शिल्प में प्रयुक्त होनेवाला वायुकर्म सिद्धान्त हैं) ३५ वें सूक्त के ७ वे वर्ग में असंख्यों चाल चलनेवाले विमान में प्रयुक्त होनेवाले वायुकर्म सिद्धान्त दिये है । (सा.पूर्वा. ६००, उत्तर .९१०, ९११) (यजु.७-९-२ व ७-२९-३२) द्वारा निर्देशित हैं।

विश्वामित्र ऋषि - ने तीसरे मंडळ के २६ वें सूक्त के ४ से ६ मंत्रों में अथवा तीसरे अष्टक के प्रथम अध्याय के २६, २७ वें वर्ग में रोचक क्रिया करने वाले जल में मिलनेवाले वायु-कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। (तै.ब्रा. ३-६-१-३) द्वारा भी निर्देशित हैं।

वामदेव ऋषि - ने चौथे मंडल के ४६ वें सूक्त के१-७ मंत्रों अथवा तीसरे अष्टक के सातवें अध्याय के २३ वें वर्ग के मंत्रो में सूर्य-विद्युत में प्रयुक्त होनेवाले वायुओं का वर्णन, ३४ वें वर्ग के मंत्रों में विद्युत में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म गुणसिद्धान्त दिए है। (साम. उत्त. १६२८ से १६३०) (यजु २७-३०) (तै.ब्रा. २-४-७-६) द्वारा निर्देशित है। २५ वें वर्ग में स्वर्ण आदि से जड़े अन्तरिक्ष यानो में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्तों का वर्णन है। (तै.सं. २-२-१२-७) द्वारा निर्देशित है।

श्यावाश्व अत्रेय ऋषि - ने पांचवे मंडळ के ५२ वें सूक्त १ से ५ मंत्र तथा चौथे अष्टक में तीसरे अध्याय के ८ वे वर्ग में अश्वों में प्रयुक्त होनेवाले कालीशिखावाले वायुकर्म सिद्धान्तों का वर्णन दिया है। ९ वें वर्ग में शीघ्र चलनेवाले वायुकर्म सिद्धांन्तों का वर्णन है (नि. ५,५ तथा ६-१६) द्वारा निर्देशित है। १० वें वर्ग में शब्द करनेवाली वायु-कर्म सिद्धांत हैं। ११ वें वर्ग में अनुमानत दूरदर्शन वायु सिद्धांत हैं। १२ वें वर्ग में वर्षा - वायु विज्ञान है। (तै.सं. २-४-८-१) १३ वें वर्ग में ऋषि-वायुसिद्धांत हैं। १४ वें में वर्षावायु सिद्धान्त हैं। १५ वें में वायु-जल क्रिया संगति सिद्धांत (निरूक्त ६-४)। १६ वें में शस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले वायु कर्म सिद्धान्त। १७ वें में पोषणकर्ता वायु कर्म सिद्धांत (तै.सं. २-४-८-२ कर्म सिद्धान्त। १८ वें में वायु, जल, अग्नि संयोजन क्रिया सिद्धांत। १९ वे में प्रकाशमान पदार्थो में वायु कर्म सिद्धान्त। २० वे में रजोगुणी अश्विनी वायुकर्म सिद्धात। २१ वे में वायुयान अस्त्रशस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाले सिद्धांत। २२ वे में वायुयान किरण वायुसिद्धांत। २३ वे में पदार्थ वृद्धिकरने वाला वायुसिद्धांत (तै.ब्रा. २-८-५-७) २४ वे में वाहन अश्वशक्ति में प्रयुक्त होनेवाले वायुसिंद्धात। २५ वे में अग्नि, विद्युत, वायु , किरण सिद्धांत (अथर्व. ७-५०-३) (तै.ब्रा. २-७-१२-४) २६ वे में अश्वशक्ति में प्रयुक्त होनेवाले वायुसिद्धांत। २७ वे में शिल्पक्रिया में प्रयुक्त होने वाले वायु कर्म सिद्धांत।२८ व २९ वे में वायुयाम ईधन में प्रयुक्त होनेवाले वायु शिल्प-सिद्धात।

एवयाग रूद्रात्रेय ऋषि - ने (५-६७, १ से ५ मंत्रों) अथवा (४-४-३३ वे वर्ग) में गर्जन शक्तिवाला वायुसिद्धात। बढ़े हुए बल से पृथ्वी की ओर आनेवाला वायु सिद्धांत है।

शयो ब्रहस्पति ऋषि ने - (६-४८-११ से १६) अथवा (४-८ ३) में विज्ञान तथा अन्न को चेष्टा करनेवाला वायु सिद्धान्त। चौथे वर्ग में कंपनद्वारा यज्ञ संपन्न करानेवाले वायु और श्रृष्टि विज्ञान भारद्वाजो ब्रहस्पति ऋषि - ने (६-६६- १ से ५) अथवा (ऋ.अषम ५-१-७ अन्तरिक्ष में धूलरहित पवन कर्म सिद्धान्त। ८ वें वर्ग में अन्तरिक्ष विद्युत वायु कर्म सिद्धांत (निरू ३-२१) (तै.रा. ४-१-११-३) (तै.ब्रा. २-५-५) द्वारा निर्देशित है।

वशिष्ठ ऋषि - ने (७-५६-१ से ५) अथवा अष्टक (५-४-२३) में धारण शक्ति वायु सिद्धान्त। २४ वें वर्ग में शीघ्र वेग वायु सिद्धान्त। २५ वें वर्ग में वर्षा करानेवाला, २६ में जलों को धारण करानेवाला २७ वे में वर्षा कराने वाला, २८ वे में पदार्थो से युक्त वायुसिद्धांत। २९ वे में अधिक वर्षायुक्त वायुसिद्धांत (निरूक्त ४-१५)। ३० वे में प्राणवायु सिद्धान्त (सा.पू. २४१)। ३१ वे वर्ग में विस्तार युक्त वायुसिद्धान्त (यजु. ३-६०) (अथ ७-७७) (तै.सं. १-४-१-७७) (नि.१४-३५)। (मंडल ७-९०-१-७) अथवा (५-६-१२) वायु-विद्युत तत्व पदार्थ सिद्धांत यजु. २४-२४,३३,३७। (ऋ९-९१-७) (तै.ब्रा. २-८-१-१)। १३ वें वर्ग में वायुकर्म सिद्धांत। (यजु. २७-२३) (ऋ७-९०-७) (तै.ब्रा. २-८-११) १४ वे वर्ग में वायु पान करने वाले तत्व तथा पदार्थ; विद्याको उत्पन्न करनेवाले वायु सिद्धांत। (यजु.७-७) (तै.सं.१-४-४-१)। (३-४-२-१) (यजु.२७-२७-२८) (तै.सं.२-२-१२-३) (तै.ब्रा. २-२-१-३)

पुनर्वत्सुव व ऋषि - ने तीव्र गतिवान वायु को तीन टुकडों में बाटकर शस्त्रनिर्माण वायुसिद्धांत। १९ वे वर्ग में २० में यानो में काम

आनेवाले वायुसिद्धातं (तै.सं.२-५-११-४)। २१ वे में शस्त्रों में ९ प्रयुक्त होनेवाला वायु-जल सिद्धांत। २२-२३ वे में वायु, जल से चलने वाले वायुसिद्धांत। (अर्थ ११-१-२१)। २४ वे में अन्तरिक्ष मार्ग मे चलनेवाले वाहनों में प्रयुक्त होनेवाले वायु सिद्धांत।

सौभर काण्व ऋषि - ने (८-२०-१ से ५) अथवा (६-१--३६) प्रस्थान करो, दृढतर, चक्रादिक रथो को चलानेवाले वायुसिद्धांत (साम.पूर्वा. ४०१)। ३७ ते ३९ वे वर्ग में शब्दशस्त्रों में प्रयुक्त होनेवाला सिद्धान्त। ४० वे में वायु औषधि सिद्धांत।

वसोराव्य ऋषि - ने (८-४६-२५ से ३०) अथवा (६-४-६) में पृथ्वी द्वारा पालन वायु सिद्धांत। (सा.पू. १४९, १७४) (उत्तरा. १७ से ८५) २९ वे वर्ग में पृथ्वी तथा अंतरिक्ष में स्थिरिता बनाए रखने वाला सिद्धांत।

तिरश्चीर्द्युतानो वा मारूत: ऋषि - ने (८-८६) (६-६-१४) में द्वारा नामक परमाणु दोष निवारक वायु सिद्धांत (अथर्व २-११-३६) दिया है।

जमदग्नि भार्गव ऋषि - ने (८-१०१-९,१०) अथवा (६-७-७) में प्रकाश तथा वेग में बसने वाले वायुसिद्धांत (यजु.३३-८५)

सौभरिकाण्व ऋषि - ने (८-१०१-१४) अथवा (६-७-१५) में अग्नि के साथ वायु-व्यवहार सिद्धांन्त दिए है।

स्थूभर रश्मि भार्गव ऋषि - ने (१०-७७-१,५) अथवा (८-३-१०) में मेघ के जल बिन्दु यक्षि पदार्थों को देनेवाले वायु सिद्धांत। ११ वे में दूर, पास से गति प्राप्त कराने वाले वायुसिद्धांत। १२ वे में वायु गुण सिद्धांत। (निरुक्त ३,१५)। १३ वे में दीप्तवाले पदार्थ व वायु किरण सिद्धांत।

अनिलोवातायन ऋषि - ने (१०-१६८, १ से ४) अथवा (८-८-२७) शस्त्रों मे प्रयुक्त होने वाले वायु सिद्धान्त।

काक्षीवति ऋषि- ने (१०-१६९-१ से ४) अथवा (८-८-२७) में वायु किरणसिद्धांत (तै.सं.७-४-१७-१,२) (निरुक्त १-१७)

अलो वातायन ऋषि ने (१०-१८६-१ से ३) अथवा (८-८-४४) जीवन प्रदाता वायुसिद्धांत (सा.पू. १८४) (सा.उत्तरा. १८ से ४०,४२) (निरुक्त १०८८० (ते.ब्रा. २-४-१.८) (आ.२-४२-२) (४.४२-४)

इस प्रकार हम देखते हैं कि वेद केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण ही प्रस्तुत नहीं करता अपितु मानव मात्र के भौतिक सुखों के लिए भी विज्ञान का अपार भंडार है। आशा है आज का वैज्ञानिक प्राचीन ज्ञान की खोज की ओर भी विशेष ध्यान देगा।

- छैलबिहारी लाल गोयल
वारहपट्टी, पसरहा बाजार, हाथरस (उ.प्र.)